

(क) भूतकाल का प्रयोग

[लङ् लकार]

पाणिनी व्याकरण के अनुसार लङ् लकार का प्रयोग भूतकाल की क्रिया के लिए होता है जो आज न हुई हो अर्थात् जो बीती हुई हो, परन्तु व्यवहार में सामान्य के लिये लङ् का प्रयोग किया जाता है। जैसे :-

राम ने कल पढ़ा - रामः ह्यः अपठत्।

राम ने आज पढ़ा - रामः अद्य अपठत्।

इस तरह के वाक्यों में दोनों स्थानों में [लङ्] लकार का ही प्रयोग किया जा सकता है।

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. पिता के आदेश से राम वन को गए।
2. आज बिमला विद्यालय नहीं जायेगी।
3. ईश्वर ने उसकी रक्षा की।
4. वीरों ने प्राणों का मोह छोड़ कर देश की रक्षा की।
5. आज सवेरे मैं अपने मित्र के साथ सैर को गया।
6. श्रवण कुमार ने अपने वृद्ध माता-पिता की खूब सेवा की।
7. मैंने जंगल में मोर को देखा।
8. मैं दो रुपये में यह पुस्तक लाया।
9. तुमने नासिका से पहले गन्ध सूंघी, फिर मुख से फल खाया।
- 10 ऋषि दयानन्द ने वेदों पर नवीन भाष्य लिखा।

(ख) भविष्य काल का प्रयोग

[लृट्-लकार]

जो क्रिया इस समय के बाद हो, चाहे आज, कल सुदूर भविष्यत् में - सबके लिए लृट् - लकार का प्रयोग होता है। जैसे :-

मेरा भाई आज रात को आयेगा - मम भ्राताऽद्य रात्रावागमिष्यति

आज वह नहीं पढ़ेगा - अद्य सः न पठिष्यति।

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. वे दूसरी श्रेणी में प्रवेश करेंगे।
2. मैं दिल्ली जाऊँगा और लाल किला जरूर देखूँगा।
3. जो सत्य बोलेगा ईश्वर उसकी रक्षा करेगा।
4. क्या आप आज यहां नहीं आयेंगे ?
5. स्कूल में तुम कौन-सा खेल खेलोगे ?
6. अब वह कुछ नहीं बोलेगा।
7. आज खेलने का दिन है अतः वह नहीं पढ़ेगा।
8. उसके घोड़े आज नहीं दौड़ेंगे।
9. उसके सिर में दर्द है अतः वह रोटी नहीं खायेगा।
- 10 मेहमान कल अपने घरों को जायेंगे।

(ग) आज्ञा - प्रार्थनादि में - [लोट् - लकार] का प्रयोग

विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, सत्कार पूर्वक व्यवहार, प्रार्थना, प्रश्न प्राप्त, समय का कथन, अभ्यनुज्ञा (इच्छानुसार कार्य करने की इजाजत)।

विधि :- ग्रामं भवान् आगच्छतु - आप ग्राम में आये।

निमन्त्रण :- रविवासरे प्रातः भवानस्मद्गृहे भुङ्क्ताम् - रविवार प्रातः हमारे यहाँ भोजन करें।

आमन्त्रण :- इह भवान् भुङ्क्ताम् - चाहें तो आप यहाँ भोजन करें।

सत्कारपूर्वक व्यवहार :- अधीच्छामो भवन्त माणवकं भवान् अध्यापयतु - हम आपसे चाहते हैं कि आप हम बालक को पढ़ाइये।

प्रश्न :- किं न खलु में व्याकरण पठानि - श्रीमान् जी, क्या मैं व्याकरण पढ़ लूँ ?

प्रार्थना :- भवति में प्रार्थना व्याकरणं पठानि - मेरी प्रार्थना है कि व्याकरण पढ़ूँ।

प्रेरणा :- करोतु घटं भवान् - आप घड़ा बनायें।

प्राप्त समय का कथन :- पाठं पठतु भवान् - आप का पाठ पढ़ने का समय हो गया।

अभ्यनुज्ञा :- साहित्यं वा पठ, अनुवादं वा कुरु - चाहे साहित्य पढ़ो, चाहे अनुवाद करो।

आशीर्वाद में भी लोट् लकार का प्रयोग होता है। जैसे :-

आयुष्मान् भव - बड़ी उम्र वाले हो।

आत्मानुरूपं पुत्र लभस्व - अपने जैसा पुत्र प्राप्त करो।

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. क्या मैं यह पुस्तक देख सकता हूँ ?
2. शासक, संयमी, त्यागी और कर्मठ हो।
3. इन बालकों को संस्कृत भाषा पढ़ाओ।
4. मनुष्य में आपस में भेद-भाव न रहे।
5. सत्यपुरुषों की सेवा से फल प्राप्त करो (लभ)।
6. हमारे नेता राष्ट्र के रक्षक बनें।
7. मैं बाज़ार जा रहा हूँ, आपके लिए कुछ लाऊँ ?
8. तुम दोनों पाँच तारीख को विद्यालय में आओ।
9. अपने कर्तव्य को जानो और सन्मार्ग पर चलो।
10. हे परिश्रमी विद्यार्थियों! सावधानता से प्रश्नों के उत्तर लिखो।
11. बुढ़िया बोली - बेटा! दीर्घ आयु पाओ और हर तरह से फलो फूलो।
12. बेटा! धूप में नंगे पाँव, नंगे सिर मत घूमा करो।
13. रात के दस बज गये हैं चाहे पढ़ो, चाहे सो जाओ।
14. इधर देखिए, तमाशा हो रहा है ?
15. कुछ खाइए, पीजिए, यह क्या अभी आए और चल दिए।

(घ) आज्ञा - प्रार्थनादि में [लिङ्] लकार

लोट् लकार के प्रकरण में आज्ञा, प्रार्थनादि जिन अर्थों में लोट् लकार का प्रयोग बनाया गया है, उन अर्थों में लिङ् का प्रयोग भी हो सकदा है।

1. लिङ् का अधिकतर प्रयोग उन वाक्यों में होता है जिनमें संभावना, उपेक्षा या कर्तव्य का भाव पाया

जाता है। जैसे :-

- (क) शायद मेरे पिता जी शाम को आ जायें।
कदाचिन्मे पिता सायमागच्छेत्।
(ख) जो आत्मिक शान्ति चाहे वह किसी की हिंसा न करे।
य आत्मिकी शान्तिमिच्छेत् सः कमपि न ह न्यात्।
(ग) तुम्हें प्रतिदिन विद्यालय समय पर आना चाहिए।
त्वं प्रतिदिने विद्यालयं यथासमयमागच्छेः।

2. जब काल, समय, वेला शब्दों में से किसी एक का तथा उसके साथ “यत्” का प्रयोग हो तो विधिलिङ्ग का ही प्रयोग होता है। जैसे :-

अब समय है कि आप रोटी खायें।

समयो यद्भवान् भोजनं खादयेत्।

3. जहां योग्यता अथवा सामर्थ्य का भाव पाया जाये वहाँ विधिलिङ्ग का प्रयोग होता है। जैसे :-

(क) योग्यता :- तुम इस योग्य हो कि अध्यापक बन जाओ।

त्वमाध्यापको भवेः।

(ख) सामर्थ्य :- तुम सब दसवीं की परीक्षा में पास हो सकते हो।

यूयं सर्वे दशम - परीक्षामुत्तरेत।

है।

4. जिन वाक्यों में हेतुहेतुमद्भाव (शर्त) पाया जाता हो उनका अनुवाद विधिलिङ्ग लृट् से किया जाता

जैसे :-

(क) यदि तू विद्यालय में जायेगा तो धन प्राप्त करेगा।

विद्यालयं गच्छेत्तु धनं लभेत्तुः।

(ख) यदि तू चोरी करेगा तो जेल जायेगा।

चौर्यं कुर्यात्तु कारागारं यायाः।

गमिष्यसि - गच्छसि

लप्स्यसे - लभसे

करिष्यसि - करोषि

यास्यसि - यासि

5. जब वाक्य में इच्छावाचक शब्दों का प्रयोग हो तो लिङ् या लोट् का प्रयोग होता है। जैसे :-
मैं चाहता हूँ कि आप तुरन्त घर जाएँ।

इच्छामि (कामये) भवान् झटिति गृहं गच्छेत् (गच्छतु)।

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. आज बड़ी गरमी है संभव है आन्धी आए।
2. तू कभी भी किसी पर क्रोध न करे।
3. वह अपनी बुरी आदतें छोड़ दे।
4. हम सब गरीब को अवश्य पूछें।
5. हमें हिंसा नहीं करनी चाहिए।
6. हम चाहते हैं कि विद्यार्थी - जीवन समाप्त करके देश की सेवा करें।
7. सज्जनों को चाहिए कि झूठ न बोलें।
8. अब समय है कि तुम देश की रक्षा में लग जाओ।
9. जो पीछे निन्दा करे, मनुष्य ऐसे व्यक्ति को मित्र न बनाए।
10. धीर पुरुष विपत्ति को फूलों की माला के समान गले में पहन ले।

